''वेदों में ओङ्कार''

गायत्री को ही ओङ्गार कहा गया है **'गायत्री मूलका: वेदा:'** (मार्कण्डेयस्मृति) गायत्री मूल को वेद:' (लौगाक्षिस्मृति)। ओमिति ब्रह्म (तैत्तिरीयोपनिषद्) ब्रह्म गायत्री ति (शत पत्र ब्राह्मण) ओङ्गार (शब्द से गाय भी सिद्ध है। जैसे गायत्री को ओडकार माना है उसी प्रकार ओंडकार को भी गायत्री मंत्र माना गया है। **''ओङ्कार स्तु परं ब्रह्म गाय्रत्री स्यात्तदक्षरम्। एवं मंत्रो महायोगा: साक्षात् सार उदाहृत:** (उशन: संतिता ओंकार परब्रह्म है, गायत्री उसका अक्षर है इन दोनों का योग ही सार स्वरूप है। गायत्री मंत्र में लिखा है - **गायत्रीच स्वयं वेद: प्रणवचय संयुत:** गायत्री, अकार, उकार और मकार से युक्त वेद है। गायत्री के मुख से वेदों की उत्पत्ति है। प्रणव गायत्री का ज्योति स्वरूप है और ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद गुण भेद से गायत्री के ही सगुण रूप हैं **अत: वाङ्गमयं प्रणव: सर्वं तस्मात् प्रणवमभ्यस:त् (याज्ञवल्क्य स्मशि)** समस्त वैदिक वाङ्गमय प्रणव (ओंङ्गार स्वरूप है इसका अभ्यास करना चाहिये। मनुस्मृति के अनुसार **अकारं चाप्युकारं च मकारं च प्रजापति: वेदत्रया निरदुह यर्मुकस्थ् रितीत्रिच**- ब्रह्माने तीनों वेदों से अकार, उकार एवं मकार तीन अक्षरों को तथा भू:, भुव:, और स्व: इन तीनों व्याहृतियों को दुहा है, निकाला है।

ओङ्कार, शब्दवाच्य एवं अशब्द वाच्य भी है -

त्रिक सिध्दान्त निगम (वेद) और आगम (तंत्र) दोनों में ही मान्य है। वेद का मंत्र है - **तिस्त्रो मात्रा मृत्युमत्य: प्रयुक्ता अन्योन्यसक्ता अनविप्रयुक्ता क्रियासु बाह्याभ्यन्तर मध्यमासु। सम्यक प्रयुक्त सु न कम्पते ज्ञ: ।।** ओङ्कार की अ, उ और मकार में तीनों मात्राएँ मृत्यु को देनेवाली हैं। यदि बाह्य आभ्यन्तर और मध्यमारीति से ठीक तरह से प्रयोग किया जाय, तो विद्वान् विचलित नहीं होता है। सैषा त्रय्येव विद्या तपति (शतपथ ब्राह्मण) त्रयी विद्या ही तप रही है। अ, उ और म इस त्रिक में मकार क्या है ? बिन्दु है या मकार है। बिन्दु और मकार में क्या अन्तर हैं, दोनों एक हैं या पृथक हैं ? जैसे जण्ण्ढ वर्ण (ऋल्ट आदि) तथा विसर्ग के ओश्रितं रेफ, लकार और हकार

वैसी श्रुतिमात्र धारण करने पर भी रेफादि से भिन्न हैं, वैसे ही बिन्दु भी मकार से भिन्न है। **हकाऐ रूप माशक्त्या मकारे ना हृदि स्थित: । मकारादन्य एवासं तच्छायामृत (तंत्रालोक)** मकार से अन्य उसका छायारूप बिन्दु हैं। उक्त त्रिक त्रयी विद्या है, जिसका उदघोष वेद और तंत्रशास्त्र करता है। आगम और निगम दोनों ही प्रामाण्य वाद हैं। त्रिक में मकार रूद्र हैं, जो वर्णों का

विश्रान्तिस्थान है। उच्चारण के अनुभव के आधार पर भी ''म'' पर मुख बंद हो जाता है। जिस प्रकार राम शब्द हैं, इसमे म उच्चारण करते ही दोनों ओष्ठ बन्द हो जाते हैं। माया, कला विद्या, राग, काल, नियति और पुरूष इसी मकार के अन्तर्गत हैं। सृष्टि का कारण स्वरूप बिन्दु नकारात्मक मंत्र वयव रूप धारण करके जब प्रमाण स्वरूप स्वसंवित की ओर उन्मुख होता है तब प्रतिष्ठा कला के अन्तर्गत उकार रूप को ग्रहण करता है। तब वह विष्णु रूप से ज्ञातव्य है। इससे नीचे अकारख्य परम धाम है। जहाँ कमल पूर बैठे ब्रह्माजी विराजमान है। यहाँ आकार प्रणव (ओङ्कार) की निष्पत्ति होती है।

इस संबन्ध में नेत्रतंत्र के प्रमाण उद्धृत हैं - **मकारो हजत्र वै रूद्रो वर्ण संघट्ट उत्तमः। यदा स्थितिंच लभते स्वोन्मुखंसृष्टि कारणम्। प्रतिष्ठारव्य उकारस्तु विष्णुः साक्षाद् भवत्योगा। निवृत्तिस्तु यदा सर्वं निष्पन्नं प्रणवं बिदुः।। अकारख्यं परं धाम ब्रह्मा स कमलासनः। मंत्र सृष्टि र्मवेदेषा शिवस्य परमात्मनः।।** पैर के अँगूठे से हृदय तक अकार का मार्ग है। इसमें भुवन प्रपंच रहता है। ब्रह्म दैवत्य (ब्रह्मादेवता) जुघोजात रूप अकार, अपनी ऋध्दि, सिध्दि, ष्टति, द्युति, लक्ष्मी, मेघड, कान्ति और स्वघा इन अपनी आठ कलाओं से संपूर्ण प्राणियो में स्थित रहता है। पृथ्वी से प्रधान तत्व तक यहाँ व्याप्ति है। मति, क्रिया, वृध्दि, माया, नाडी, भ्रामणी, मोहिनी, ये ले कणनां श मे रहने वाली वामदेव कलाएं हैं।

उकारात्मक अघोर कलाऐ - तम, मोह, क्षुद्या, निद्रा, मृत्यु, माया, मामा, जरा है जो जो कंठ से तालु तक रूद्रांश मेर घडी हैं। नियति से मायातत्व तक का इनमे परिणयान है। बिन्दु रूप ईश्वर तत्व में अवस्थित तत्पुरूष कलाएँ भ्रू के मध्य में रहती है इनके नाम हैं - निवृत्ति, प्रतिष्ठा विद्या और शांति। वायु के आचरण को लेकर बिन्दु तक ये हैं। ताक्ष, सुतारा, तदणी, तारयंती, सुतांरिणी ये ईशान कलाऐं सदाशिव नादतत्व से संबद्ध हैं।

यह पंच ब्रह्मस्वरूप है।

जोत्स्ना, ज्योत्स्नावती, सुप्रभा, विमला और शिवास्ते अर्धचन्द्र कलाए हैं।

संपत्ती, निरोधिनी, रेमेडी, ज्ञानलोधा, और तमोपहा ये निरोधिका कला ए हैं।

इन्धिका, दीपिका, रोचिका और मोचिका से नादक ताएँ हैं। ऊर्ध्वजा, नादान्त कला है। सूक्ष्मा, सुसूक्ष्मा, अमृता, अमृत संभवा, और व्यापिनी ये शक्ति कलाएँ हैं। व्यापिनी, कोमरूपा, अनंता, और अनाथा ये व्यापिनी की कलाएं हैं।

सर्वज्ञा, सर्वंगा, दुर्गा, सवना, स्पृहणा और समना से संबद्ध कलाएँ हैं। अर्धचंद्र से उन्मज्ञ तक ध्वनिवर्ग कहलता है; यही तुरीय धाम है यही गुरू पद है। यह तुरीय धाम ओम् (शिवपद) है पुष्पदंत गंधर्व के शिव महिम्नः स्तोत्र मे श्लोक है- **त्रयीं तिस्त्रो वृत्ती स्त्रि भुवन मथो त्रीनपि सुरा न काए द्वै वर्णेस्त्रिमिरपि दधत्तीर्ण विकृति। तुरीयं ते धाम ध्वनिमिरव रून्धान मणुभिः। समस्तं व्यस्तं त्वां शरण। द ! गृणा त्योमिति पदम्।।**

हे शरण देने वाले शिव ! वेदत्रयी (ऋक् यजु और सामवेद) है, वृत्तियाँ (जाग्रत्, स्वप्न और सुषुप्ति) भी तीन हैं, भुवन भी तीन हैं, देवता (ब्रह्मा विष्णु और शिव) भी तीन हैं। अ, उ और म इन तीन वर्णों से युक्त तथा विकार शून्य व्यस्त एवं समस्त अणु ध्वनियों से पूर्ण तुरीय धाम वाला आपका ओम् (ॐ) पद है। इस आकृति में अ और उ तथा म का प्रत्यक्ष श्लिष्ट रूपं दिखाई दे रहा है इसमें धुंडीदार जो पुच्छ है वही ब्रह्म पुच्छ है ब्रह्मपुच्छं प्रतिष्ठा - यह स्वरुप महारुद्र हनुमान्जी का जैसा प्रतीत होता है रुद्र म ने जगत् को पूंघ में लपेट रक्खा है। उक्तस्तोत्र के टीकाकार आचार्य मधुसूदन सरस्वती ने तीर्णविकृतिकी व्याख्या में लिखा है - **तीर्ण विकृती सर्व विकारातीतं तुरीयं अवस्था त्रयाभिविलक्षणं तव धाम स्वरुपं अखण्डचैतन्यात्मकम्। तवे ति राहोः शिर इतिवदुपचारेण षष्ठी। अणुभिर्ध्वनिमिरवरुन्धातं स्वत उच्चारयितु मशक्यैरर्धमात्राया प्लुतोच्चारण वशेन निष्पाद्य मानैः सूक्ष्मशब्दैरववोद्यं कुर्वत् प्रापयत्। समुदाय शक्त बोधयदिति यावत्। अर्धमात्राया एकत्वेऽपिध्यनिमिरिति बहुवचनम। प्लुतोंच्चारणे चिरकाल मनुवृत्तायास्तस्या अनेकत्व निरुपकत्वान्त विरुध्दम्''** संपूर्ण विकारों से रहित तीन अवस्थाओं के अभिमान वाला विलक्षण, अखण्ड चैतन्यरुप तुरीयधाम है। श्लोक में तव पदमॅराहोः शिरः राहु का शिर की तरह लक्षणा से षष्ठी विभक्ति है। अणु ध्वनियों सूक्ष्म होती है। उनका उच्चारण नहीं किया जा सकता अर्धमात्रा का प्लुतोच्चारण वीा या सूक्ष्म शब्दोंद्वारा समुदाय शक्ति से बोधन किया गया ओम् पद है। अर्धमात्रा में एकवचन और ध्वनिशब्दमें बहुवचन है अतः विरोध है। किन्तु ऐसा नहीं है क्योंकि अर्धमात्रा का अनुवर्तन चिरकाल तक होने से उसमें अनेकरुपता आ गई है। अतः दोष नहीं है।

प्रपंचसार विवरण में ओङ्कार की सात मात्राएँ मानी है १) अकार २) उकार ३) मकार ४) बिन्दु ५) नाद ६)शक्ति ७) शान्त। इनके विराट्, हिरण्यगर्म, कारणगुण, सामान्यगुण, बीज, गुणाभाव और गुणसाक्षी वाच्य हैं। प्रणवपटल में आचार्य शंकर द्वारा क्रमशः स्थूलत्व, सूक्ष्मत्व,कारणत्व, समत्व, बीजत्व, निर्विशेषत्व और साक्षित्व का दर्शन प्राप्त होता है। प्रणवात्मिका परा वाक् कुण्डलिनी ही प्रकृति है। पश्यन्ती आदि विकृतियाँ है। प्रणव उच्चाण से पहिले पूर्ण संविदात्मक पर प्रणव में स्थित रहता है।

वाक्यपदीयहेताराज की टीका में लिखा है - **संवित्**

पश्यंती रुपलाली परा वाणी शब्द ब्रह्ममयी है। अत: पारमार्थिक शब्द से ब्रह्म तत्व अलग नहीं है।

विवर्तवाद मे वैखरी स्वरुप के कारण भेद है। पर प्रणव शब्दभेदो को पार करता हुआ अभिव्यक्त होता है। ज्योतिर्लिङ्ग स्वरुप पर प्रणव मूलाधार से सुषुम्णा में प्रवेश करता है। तथा अकारादि वाचकों में पर्यवसान करके मूर्ध देश तक जाता है। **''अध्युष्ट वलया कारण प्रणवत्व मुपागता''** इस शक्ति महिम स्तोत्र के अनुसार परप्रणव और कुण्डलिनी एक ही है। प्रणव की कलाएँ संपूर्ण शरीर में सन्निविष्ट रहती है। अत: इसे पिण्डमंत्र भी कहते हैं। संपूर्ण पिण्ड मे रहने पर भी यह विशेषत: हृदय देश में ध्वनित होता रहता है। विज्ञान भैरव के अनुसार, पिण्ड मंत्र क्रम से -अर्धचन्द्र बिन्दु, और नादान्त शून्योच्चारण मे साक्षात शिव है। विज्ञान भैरव ग्रंथ कर्ता ने लिखा है कि ओम् पद हृदय में अनाहत एवं समन्त वाङ्मय वर्णों से गुंफित हो रहा है यही शिव है। सर्वप्रथम अशुन्य से शून्य हुआ, शून्य बिन्दु से ओङ्कार हुआ ज्योतिर्लिंग स्वरुप शिव जो मंदिर में दर्शनीय है, वे शून्य भी हैं और अशून्य भी है। शून्य से स्पर्श (क से म तक) उत्पन्न होते हैं (स्वच्छंद से ग्रहग्रंथ।

शक्त मत में अ,क,थ (त्रिकोगात्मक बिन्दुत्रय) ओङ्कार ही है। अष्टादशाक्षर गोपालमंत्र का काम बीज (क्लीं) तथा ऐं, ह्रीं, श्रीं, ये सभी प्रणववाचक माने जाते हैं। **रुद्रयामलतंत्र ने उमा को ओङ्काररुपीणी माना है। उमेति परमा शक्ति: पूर्वभीवमुपेयुषी। अध्युष्टवलयाकार प्रणवत्वमुपागता।** उमा प्रणस्वरुपा कुण्डलिनी है।

- लिजपुराण के अनुसार ओम् का निर्वचन -

शंकर जी ने उमा से कहा है - शिवे: अकार, उकार और मकार ये मेरे प्रणव के अक्षर हैं तथा उकार, मकार एवं अकार आपके प्रणवाक्षर हैं। उमा कुण्डलिनी प्रणवरुपा है। अकार रुपिणी अजए मदद्रव मधु से युक्त है।

अकार त्रिमात्रिकप्लुत है। उ,म,अ = उमा।

महावाशिष्ठ में उमा को ओङ्कार का सार कहा है।

स्वच्छंद तंत्र पटल ६ में इस त्रिक अक्षर के तीन देवता (ब्रह्मा, विष्णु और शिव) हैं। बिन्दु (ईश्वर) और नाद (सदाशिव) हैं ये पाँच प्रणव हैं। हं स:प्राणासंचार है जो प्रत्येक प्राणी मे रहता है। ह्रस्व (सूक्ष्म) दीर्घ (अतिसूक्ष्म प्लुत (परशिव) ये पाँच प्रकार विधि है। इनको जानने से साधक ब्रह्मरंध्र का भेदन करके मोक्ष को प्राप्त होता है। अर्धमात्रा एवं प्लुत - प्लुत स्वर में तीन मात्राएँ होती हो प्लुत का उच्चारण मुर्गा करता है और मुसलमानों के यहाँ नमाज पढने समय भी तीन मात्रा का उच्चारण किया जाता है।

अर्धमात्रा का उच्चारण नहीं किया जा सकता है प्लुत स्वर भी ध्वनिमात्र है अनुच्चार्य है राशिसूक्त में अर्धामात्रा स्थिता नित्यं यानुच्चार्या विशेषत: लिखा है अर्थात् दुर्ग्ण अर्धमात्रा स्वरुपिणी है। यही तुरीयतत्व है और यही अति तुर्यतत्व भी निर्देश करता है। इसको उमा कहते हैं। केतोपनिषद् मे इसी शक्ति उमा का वर्ण न है। यह शिव शक्ति संयोग भेद घटित अभेद है जिससे शांकर वेदान्त के अद्वैत वाद में वाद्य नहीं आती है। आधी मात्रा प्लुतद्वारा द्वारा ध्वनित है। तीन मात्राओं से शून्य प्रणव का नादभाग उमा या इन्दुकला कहलाता है। जिस समय प्राणिमात्र की बुध्दि सोई रहती है, उस समय दहरा काशवर्ती शिव के शिर पर अकारादि मात्रा त्रय शून्य अनाहतनाद विन्दुरुप में स्थित रहता है वह उमा है। शिवमंदिरों में लिंग के ऊपर घंटा टकार रहता है वह ओम् का नादभाग उमा का सूचक है।

ओङ्कार ब्रह्म है - ओम् शब्द त्रिलिङ्ग है अथवा तीनोंलिङ्गो से शून्य है। इस बात का उल्लेख भागवत के गजेन्द्र मोक्ष में वर्णित

है। श्रीमद् भगवद् गीता में - ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म ओम् एकाक्षर ब्रह्म है। ओं तत्सदितिनिर्देशो ब्रह्मणस्त्रिविध: स्मृत:। इसि मे ब्रह्म त्रिविध है। तत् पद से अनिर्देश्य, अलौकिक, अलौकिक, सद् से सत्ताधारी ओम पद है। रहन्नारदीय पुराण में अकार, उकार, मकार, नाद और बिन्दु को पाँच प्रणव माना है। क्रमश: ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र इन तीनों मात्राओं के देव है।आधी मात्रा पर परब्रह्म का रुप है। वाच्य ब्रह्म है वाचक प्रणळ वस्तुत: वाच्यवाचक संबन्ध यहाँ लाक्षणिक है।

स्मृति के अनुसार प्रणव (ओङ्कार) वेद के प्रति मंत्र मे लगाया जाता है अन्यथा मंत्र शिरोहीन माना जाता है। मंत्रों के आदि में प्रणव का लगाना विषेस्य निर्देश तथा लिङ्गत्रय रहित का बोधक है। सभी वैदिक मंत्र प्रणव से हुए हैं और इसी में तीन भी हो जाते हैं। स्मृती प्रामाण्य से प्रजापति के मुख से ओम् प्रकट हुआ इसके ब्रह्मा ऋषि है। गायत्री छन्द है। अग्नि देवता है। श्वेतवर्ण है। तीन मात्रा है। श्वेतवर्ण मे है। मंत्रवेत्ताओं के लिये साढेतीन मात्रा ओं का उच्चारण करना चाहिए। देवता के ध्यान से ल्पुत का चिन्तन ध्वनन करना चाहिये। लगातार तेल की धारा की तरह दीर्घघंटा के शब्द के समान उच्चारण रहित प्रणव के अन्तका उच्चारण करना चाहिये। ऐसा जो जानता है वही वेदों का ज्ञाता है। आदि चतुरक्षर वक्र है जैसा(अ,उ,म और नाद। पाँचवाँ बिन्दु,ऋजु (सरल सीधा) है। ओम् यह उद्गीथाक्षर है - ऐसा सांख्य तथा पाशुपत कहते हैं। इसमें तीन मात्राएँ व्यक्त तथा अव्यक्त हैं। इनकी सुक्ष्मा परा अध्यात्म अधिभूत और अधिदैव समझना चाहिये। वेद वेदांत आदि सभी प्रणव में है इसका अभ्यास करना चाहिये यह स्मृतियों की आज्ञा है। नंदिकेश्वर कृत काशिका की

''अकारोकाराम्यांतिरूपन्न प्रणवरूपेणौ कारेण सगुणशनिर्गुण यो रै क्य बुद्धौ द्वैतनिरास:'' (एओऽ.सूत्रमाठम) अ और उकार से प्रणवरूप ओंकार बनता है इस कथन से ओंकार की पुष्टि होती है।

प्रणव के भेद-

स्कन्द पुराण के यज्ञाकंड में प्रणव दो प्रकार का है

१) पर २) अपर !

षर प्रणव **''प्रज्ञानं ब्रह्म''** आदि लक्षण वाला है। प्रकर्ष रूप से नवीन है स्वभावत: परब्रह्म है। अपर प्रणव शब्द ब्रह्म है। अत्याधिक नविन होने से तथा ब्रह्म की प्राप्ति कराने के कारण गोपथ ब्राह्मण मे प्रश्न वाक्यों में पअणव क्या है। कौन सी धातु है क्या प्रातिपादित है कौन लिंग है इत्यादी चर्चा उल्लीखित है।

ओङ्कार के अर्थ स्कंद पुराण में -

ओम् ज्ञात का वाचक है क्योंकि ज्ञात एवं अज्ञात अर्थ अज्ञात है इन सब बातोंका कारण ॐ है। संदिग्ध वाचक जब औं का होता है उस समय लोक कथन के अनुसार संदिग्ध वाचन ॐ होता है। आकारआदि पदार्थों के वाचक जो पृथ्वी पर हैं उन शब्दों बिना सभी लोग ओम् इस प्रकार कहते हैं। घडा भींत आदि शब्द प्रयोग की बहुलता से आकारादि पदार्थों का वाचक प्रणव है। सभी पदार्थों का वाचक प्रणव ब्रह्म के तुल्य है। इस मंत्र को जपने वाला संपूर्ण मंत्रो के जप के फल को प्राप्त करता है।

बृहत्पाराशर स्मृति में प्रणव वर्णन -

प्रणव परतत्व है , तीन वेद हैं। तीन गुणों का स्वरूप है। तीन देवों का स्वरूप है। अग्नि, सोम और सूर्य इन तीनों का धाम है। त्रिप्रज्ञ (अन्त: प्रज्ञ, वहि: प्रज्ञ और घनप्रज्ञ) है। हृदय , कंठ और तालु में स्थित है। तीन मात्रा वाला है। बिना ओंकार के वाणी कथन नही कर सकती है।

ओंकार का प्राकट्य लिंगपुराणानुसार -

जिस समय विष्णु समुद्र में शयन कर रहे थे, उस समय ब्रह्माजीने वहाँ पहुँचकर उन्हें जगाया। किन्तु गाढ़ योग निद्रावश जब विष्णु नहीं जागे तब ब्रह्मा ने उन्हें हाथ पकड़कर उठाया। विष्णु ने कहा वत्स! तुम मेरे पुत्र हो। संपूर्ण तत्व चराचर सृष्टि की रचना मैंने ही की है। ब्रह्मा ने कहा आप जो कह रहे हैं वह झूँठ है , संपूर्ण संसार का बनाने वाला तो मैं हूँ। इसी बात पर दोनों में युध्द प्रारम्भ हो गया। इस युद्ध के निर्णय के लिये एक ज्योर्तिलिंग प्रकट हुआ और आज्ञा हुई कि इस लिंग का आदि एवं अन्त का निर्णय आप दोनों करें। भगवान् विष्णु वराहरूप धारण करके नीचे की ओर तथा ब्रह्मा लिंगके ऊपर की ओर गये। इस प्रयत्न में उन्हें एक हजार वर्ष बीत गये। ब्रह्मा और विष्णु दोनों ही थक गये किन्तु लिंग का पार नहीं मिला फिर शिव कृपा से **''ॐ''** नाद हुआ उस समय ॐ,ॐ,ॐ ३ प्लुत नाद हुआ, उस समय ब्रह्मा के साथ विष्णु ने महाशब्द को सुनकर यह क्या है ? आश्चर्य किया तथा लिंग के दाहिने भाग में सनातन ब्रह्म को देखा। आद्य वर्ण अकार है। उत्तर भाग में उकार है। मध्य में मकार है। तथा नादान्त ॐ है। भगवान् विष्णु ने उस ॐ को सूर्यमण्डल के तुल्य प्रकाशमान देखा , जिसमें आद्यवर्ण (अ) दक्षिण भाग में, और उत्तर भाग में पावक नामवाला उकार था तथा चंद्रमंडल तुल्य मकार मध्य में था। उसके ऊपर शुद्ध स्फटिक के समान तुर्धातीत, अमृतरूप निस्कल और निरूपद्रव, निर्व्दन्द, बाह्य और आभ्यन्तर (भीतर और वाहा) से शून्य प्रभु विराजमान थे।

वे प्रभु वाहा भी हैं और भीतर भी हैं, आदि, मध्य, और अंत से रहित एवम आनंद के कारण है। ओम मे तीन मात्राएँ हैं आधी मात्रा नादब्रह्म है ऋक्, यजु: और साम तीन मात्राएँ हैं, इससे वेद की उत्पत्ति हुई। ऋषि वेद द्वारा विष्णु ने परमेश्वर को जाना। मकार वीजी है , अकार बीज है , उकार विष्णु रूप योनि है। प्रकृति पुरूष का स्वामी है। बीजी, बीज और योनि महेश्वर है। लिंग से मकार

उत्पन्न हुआ। उकार योनि में मकार डालने से बढ़ा। फिर सृष्टिक्रम रचना हुई।

ॐ कार का ध्यान -

अगुलियों से नाक के दोनों नथुनों को बंद करके वध्दास न कुसा के आसन पर बैठना चाहिये। आँखो को बंद कर लेना चाहिये। (स्थान नीरव होना चाहिये। उस समय ॐ का उच्चारण निरंतर करते रहना चाहिये। उच्चारण का क्रम बंद न हो। उच्चारण में श्वास का संचार ऊपर की ओर हो। डरना नहीं चाहिये। कभी २ झटका लगता है। जिससे गिर सकता है, इस के लिए तकिया लगा लेना चाहिये। कम से कम दो घंटे का यह दैनिक प्रयोग है ६ महिने तक इसे करना चाहिये अनुभूत प्रयोग है। जब कंण्ठ में ॐ का संचार होगा उस समय काल की कोठरी दिखाई देगी जिसका रंग लाल है और उसमें दरवाजा नहीं है। इससे आगे बढ़ने पर स्वर्ग के देवगणों के दर्शन होंगे, उससे भी ऊपर १ करोड सूर्यप्रकाश दर्शन होगे।

ओंकार का स[illegible] -

नौ करोड़ जप से शब्द शुद्धि, सत्रह करोड जप से सिद्धि, सत्ताईस करोड़ जप से आकाश में गति, छत्तीस करोड़ जप के पूर्णसिद्धि।

उपसंहार -

योगिध्येय एवं योगिगम्य ॐकार ब्रह्म है। इसकी महिमा का वर्णन सर्वसाधारण साध्य नहीं है। शास्त्रों का उल्लिखित वर्णन भी सर्वसाधारण द्वारा उल्लिखित नहीं किया जा सकता है। माण्डुक्योपनिषद् आदि उपनिषदों में स्मृति ग्रंथ वेदों का ओकांर का विशद वर्णन है। स्वयंभूलिंगयुद्ध कुण्डलिनी ओंकार ही है। शिशुपालवध काव्य ओमित्तत्युक्तवतोऽथ शाङ्गिण इति श्लोक में नारदजीने श्रीकृष्ण से कहा था कि आपने नृसिंहावतार में प्रल्हाद की रक्षा के लिये हिरण्यकशिपु का वध किया था याद है कृष्ण ने कहा ओम्। नारदजी द्वारा दुसरे अवतार का संकेत करते हुए आपने सीताहारण करने पर रावण को भी मारा था स्मरण है फिर तीसरे जन्म में वही रावण शिशुपाल बन गया है इसे भी मारो कृष्णने कहा ओम्। अत: ॐकार शब्द राष्ट्र के कल्याण के लिये सर्वज्ञ साधारण द्वारा उपासनीय है।

- राधाकृष्ण शास्त्री एम.ए.
कच्ची सडक, मथुरा (यू.पी.)